ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

वर्ष 46 | अंक 40 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 18 सितम्बर, 2023 से रविवार 24 सितम्बर, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200 वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

गौ आधारित कृषि की महत्ता को आज समझ रहा है भारत देश

150 वर्ष पूर्व महर्षि जी द्वारा लिखित गोकरुणानिधि पुस्तक आज भी प्रासंगिक

गौ संवर्धन केन्द्र गाजीपुर के प्रांगण में स्वामी आनंद बोध सरस्वती स्मृति दिवस संपन्न

पुन: विश्वगुरु बनने की ओर लगातार आगे बढ़ रहा है –भारत –सुरेन्द्र कुमार आर्य

महान कर्मयोगी थे स्वामी आनंद बोध सरस्वती –बच्चन सिंह आर्य

गौ संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लें आर्यजन –धर्मपाल आर्य

गौशाला में स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी के स्मृति दिवस पर मंचस्थ श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री धर्मपाल आर्य जी एवं श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को तलवार भेंट करते हुए श्री बच्चन सिंह आर्य जी तथा सफीदो से पधारे सिख जत्थे के बंधुगण, उपस्थित आर्यजन।

आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास में गौ सेवा, संरक्षण और संवर्धन का विशेष महत्व सदा से रहा है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मुगलों और अंग्रेजों के द्वारा गौ माता की हो रही दुर्दशा को देखकर करुण भाव से गौ रक्षा और संवर्धन का बीड़ा उठाया था, उस समय ब्रिटिश हुकूमत को भी झकझोरा था और रेवाड़ी हरियाणा में प्रथम गौशाला की स्थापना की थी। महर्षि के उस गौ सेवा के कल्याणकारी अभियान को आर्य समाज निरंतर आगे बढ़ाता आ रहा है। इस क्रम में सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी द्वारा स्थापित गौ संवर्धन केंद्र गाजीपुर अपने आप में एक अनूठी और अद्भुत गौशाला है। जहां पर लगभग 1600 गौवंश का विधिवत पालन और पोषण किया जा रहा है।

16 सितंबर 2023 को स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी के स्मृति दिवस का आयोजन इसी गौशाला के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। जिसमें गौशाला के प्रधान एवं पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार, श्री बच्चन सिंह जी, जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन और अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान तथा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती की संयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, श्री मनमोहन भड़ाना जी, श्री प्रशांत गर्ग जी, श्री देवेंद्र जी, निगम पार्षद, श्री त्रिलोक जी, श्री सुरेंद्र रैली जी, श्री अशोक आर्य जी, श्री सतीश चडडा जी, श्री अशोक गुप्ता जी, श्री हरिओम बंसल जी, सभा महामंत्री श्री विनय आर्य जी और सफीदों से सिखों का एक जत्था और अनेक अन्य गणमान्य महानुभाव, अधिकारी, कार्यकर्ता तथा आर्यजन उपस्थित थे। उपस्थित सभी महानुभावों का पगड़ी पहनाकर अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर श्री बच्चन सिंह जी ने स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी की आर्य समाज और महर्षि दयानंद जी के प्रति निष्ठा और समर्पण को व्यक्त करते हुए उन्हें कर्म योगी और महान देशभक्त, गौभक्त बताते हुए उनके जीवन पर भली भांति प्रकाश डाला और अनेक उदाहरण और दृष्टांतों से यह सिद्ध कर दिया कि आप एक महान आर्य संन्यासी और आर्य समाज को आगे बढ़ाने में योगदान देने वाले प्रेरक आत्मा थे। आपने गौशाला की स्थापना कैसे हुई और किन-किन परिस्थितियों

- शेष पृष्ठ 4 पर

भारतीय रेलवे स्टेशनों पर निरंतर बढ़ रहा वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

प्रथम चरण में कुल 10 स्टेशनों पर निर्मित होंगे वैदिक साहित्य के स्टाल– आर्यजन सहयोग दें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर आर्य समाज के इतिहास में पहली बार रेलवे स्टेशनों के माध्यम से महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के प्रयास में सभी आर्य परिवार, आर्य संस्थाएं अवश्य सहयोग दें।

एक स्टाल के निर्माण का व्यय 1,50,000 रुपये मात्र

एक-एक स्टाल की राशि देने वाले आर्य परिवार एवं संस्थाएं

- ★ श्री रामभज मदान जी, परिवार की ओर से
- ★ श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी की ओर से
- ★ उत्तर-पश्चिमी वेद प्रचार मण्डल की ओर से
- ★ मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
- ★ आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की ओर से

समस्त दानी महानुभावों का हार्दिक आभार

वैदिक साहित्य के प्रचार हेतु कृपया अपनी दान राशि सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करायें-

Delhi Arya Pratinidhi Sabha-Vedic Prakashan
Doner's account A/c No : 910010009140900
IFSC CODE : UTIB0002193 Axis Bank Connaught Place

कृपया दानदाता अपना आनलाइन सहयोग देकर
व्हाटसऐप नं. पर 9540040388 सूचित अवश्य करें।

वेदवाणी-संस्कृत

प्राणाय नमो नमः

नमस्ते अस्त्वायते नमो अस्तु परायते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत आसीनायोत ते नमः॥
-अथर्व० 11 । 4 । 7
ऋषिः-भार्गवो वैदर्भिः॥ देवता-प्राणः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- **प्राण**=हे प्राण! **आयते**=आते हुए **ते**=तुझे **नमः अस्तु**=नमस्कार हो! **परायते**=जाते हुए तुझे **नमः अस्तु**=नमस्कार हो। **तिष्ठते**=ठहरे हुए **ते**=तुझे **नमः**=नमस्कार करता हूँ **उत**=और **आसीनाय**=बैठे हुए, स्थिर हुए-हुए **ते**=तुझे **नमः**=नमस्कार करता हूँ।

विनय- हे प्राण! मैं सदा आते-जाते तुझ पर दृष्टि रखता हूँ। तेरी आने और जाने की गति के साथ अपनी मनोवृत्ति को लाता और ले जाता रहता हूँ। बल्कि तेरे आने-जाने के साथ 'ओ३म्' का जप करता जाता हूँ। इस तरह दिन-रात के चौबीसों घण्टों में तेरा जो इक्कीस हजार छह सौ बार आना-जाना होता है उसके साथ मेरे इतने ही अजपा-जप होते जाते हैं। इस साधना के शुरू करने से तू ठहरने लगता है और कभी-कभी स्वयमेव कुछ समय के लिए ठहरा भी रहता है। एवं, तेरा स्वाभाविक अनुसरण करने में मेरे चारों प्रकार के प्राणायाम भी सिद्ध हो जाते हैं। तेरे आने में बाह्यवृत्ति (रेचक) प्राणायाम होता है, तेरे जाने में आभ्यन्तरवृत्ति (पूरक) प्राणायाम होता है, ठहरने में स्तम्भवृत्ति (कुम्भक) प्राणायाम होता है और स्वयमेव ठहर जाने में चौथा बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी प्राणायाम हो जाता है। मैं तो हठयोग के प्राणायाम की क्रियाओं के झगड़े में नहीं पड़ता, किन्तु आते-जाते, ठहरते और ठहरे हुए तुझे, हे प्राण! सदा नमस्कार करता जाता हूँ। बस, इसी से मुझे सब प्राणायामों का फल मिल जाता है। मैं तुझे तेरी सब स्थितियों में और सब कालों में नमस्कार ही करता हूँ। सदा तेरे सामने झुकता हूँ। कभी तुझे अपनी इच्छानुसार झुकाने की घातक चेष्टा नहीं करता। तू जो अपने सहज-स्वभाव से मुझमें चल रहा है, उसी के अनुसार मैं अपने-आपको झुकाता जाता हूँ, उसी के अनुसार अपने जीवन को संचालित करता जाता हूँ, किन्तु कभी अपनी सहूलियत के अनुसार तुझे मोड़ने की, परिवर्तित करने की अक्षम्य मूर्खता नहीं करता। हे प्राण! मैं तो आते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ, जाते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ, ठहरते हुए तुझे नमस्कार करता हूँ और ठहरे हुए, बैठे हुए, तुझे नमस्कार करता हूँ।

-:साभार:- वैदिक विनय

वेद-स्वाध्याय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

मोहब्बत और नफरत की दुकानदारी में सत्य और असत्य का ध्यान आवश्य रखें

पत्रकारों के तथाकथित बहिष्कार की समीक्षा

"सत्य के प्रकाशक, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक, महर्षि दयानंद सरस्वती जी से जब किसी ने कहा कि आप इस्लाम की आलोचना न करें या ईसाई मत का खंडन ना करें तब उन्होंने कहा था कि लोग कहते हैं कि मैं इस्लाम की आलोचना से विरत हो जाऊं परंतु सत्य को ओझल कर देना मेरे लिए संभव नहीं है। जब मुसलमानों का शासन था तो उन्होंने तलवार के बल पर आर्य धर्म एवं संस्कृति को नष्ट किया किंतु आज जब वाणी मात्र से भी उनकी आलोचना की जाती है तो उन्हें आपत्ति होती है, महर्षि दयानंद आगे कहते हैं कि आर्य जाति की यही दशा हुई और यदि इसे न संभाला गया तो यह नष्ट हो जाएगी, धर्माचार्यों के प्रमाद के कारण करोड़ों मुसलमान हो गए और अब इसाई हो रहे हैं यदि आर्य जाति को कड़वे उपदेशों के कोडे से न जगाया गया तो इसकी मृत्यु में संदेह ही क्या है? मैं यह काम किसी स्वार्थ से तो कर ही नहीं रहा हूं, इसके कारण मैं अनेक प्रकार के कष्ट सहता हूं, गालियां और ईंट पत्थर खाता हूं, विष तक भी मुझे दिया जा चुका है, परंतु जाति और धर्म के लिए मैं सब कुछ सहन करता हूं। महर्षि दयानंद ने एक अन्य स्थान पर भी डंके की चोट पर यह भी कहा कि लोग कहते हैं सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे, चक्रवर्ती राजा भी क्यों ना अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने हमेशा सत्य ही सोचा, सत्य ही बोला और सत्य ही जिया। लेकिन सत्य की राह पर चलना सरल नहीं है, इसलिए उन्होंने संसार को कल्याण की राह पर अग्रसर करते-करते स्वयं विष पीकर अमर हो गए।"

हमारे यहां आजकल नफरत और मोहब्बत की दुकान और बाजार की बातें बड़े जोर शोर से चल रही हैं। चाहे समाचार पत्र हों या टीवी डिबेट मोहब्बत की चाशनी में डूबे हुए नेता एक दूसरे को नफरत करने वाला बता रहे हैं और अपने मुंह मियां मिठ्ठू बनकर मोहब्बत की दुकान का मालिक भी बता रहे हैं। इस पर हम यह तो नहीं कह सकते की कौन मोहब्बत का महारथी है और कौन नफरत फैलाने वाला है लेकिन आए दिन यह आवाज सब के कानों में लगातार पड रही है कि हम मोहब्बत फैलाने का काम करते हैं और वह नफरत फैलाने में लगे है। वस्तुतः मोहब्बत और नफरत दोनों उर्दू के शब्द हैं। हिंदी में मोहब्बत को प्रेम और नफरत को घृणा कहा जाता है। इसमें प्रेमी व्यक्ति को यह बताने की जरूरत नहीं पड़ती कि मैं प्रेम बांटने वाला हूं और घृणा से भरे व्यक्ति को भी यह कहने की आवश्यकता नहीं होती कि मैं घृणा से भरा हुआ हूं, घृणा बांट रहा हूं। जो जैसा होता है सबको स्वयं पता चल जाता है और उसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति, परिवार और समाज तथा देश और दुनिया में कोई लोकप्रिय और कोई कम लोकप्रिय होता जाता है।

व्यक्ति, परिवार को छोड़िए आज विश्व पटल पर भारत राष्ट्र लगातार प्रेम बांट रहा है, **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना फैला रहा है, परोपकार कर रहा है, इसलिए निरंतर लोकप्रिय होता जा रहा है। इसका उदाहरण जी-20 की सफलता और उपलब्धियों से भी मिल सकता है। लेकिन यहां पर विचार करने वाली बात ये है कि यह जरूरी नहीं है जो व्यक्ति मीठा बोले, प्रेम, प्यार का प्रदर्शन करे वह हितकारी और कल्याणकारी ही होगा, जबकि इसके विपरित तथाकथित जो घृणा से भरा हुआ है, जिसे नफरत बांटने वाला कहा जा रहा है, और समय-समय पर न जाने किन-किन, कौन-कौन से विशेषणों से अलंकृत किया जा रहा है। यह तो अपनी-अपनी समझ है। हमारी भारतीय वैदिक संस्कृति में तो प्रेम के पराग से सनी हुई भाषा, भाव और शैली से भी ज्यादा सत्य को महत्व दिया गया है,

कहावत भी है कि-

जो अति का मीठा होता है
वह अपना नाश करता है
देखो मीठे गन्ने को,
कोल्हू में पेला जाता है

इसलिए मीठे और कड़वे से ज्यादा हमें सत्य और असत्य, हितकारी और अहितकारी पर ध्यान देना आवश्यक है। जो व्यक्ति मीठा बोले और गलत रास्ते पर ले जाएं वह हितकारी नहीं हो सकता बल्कि जो जरूरत पड़ने पर कड़वा बोले, लेकिन सही दिशा देकर दशा बदल दे वह हितकारी होता है। उसकी कड़वाहट में भी व्यक्ति, परिवार, समाज और देश तथा धर्म की भलाई होती है।

वेद के अनुसार **'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात'**, अर्थात सत्य बोलिए, सत्य को प्रेम पूर्वक बोलिए। लेकिन यहां यह भी समझना चाहिए कि सबको प्रेम पूर्वक बोला गया सत्य जरूरी नहीं है मधुर प्रतीत हो, क्योंकि यह भी सब जानते हैं कि सत्य हमेशा कड़वा ही लगता है। इसलिए स्वास्थ्य देने वाली दवाई जरूरी नहीं है कि मीठा सीरप ही हो, अगर रोग निवारण के लिए कड़वाहट को पीना पड़े तो वह कड़वाहट भी मधुर होती है।

हमारे यहां तो यह परंपरा रही है कि अमृत पिलाने को भी लोगों ने हलाहल विष पिलाया था। लेकिन हमारे महापुरुषों ने सत्य से कभी समझौता नहीं किया और वे अपने जहर पिलाने वाले को भी अभयदान देकर सदा सर्वदा के लिए अमर हो गए। सत्य के प्रकाशक, महान समाज सुधारक, आर्य समाज के संस्थापक, महर्षि दयानंद सरस्वती जी से जब किसी ने कहा कि आप इस्लाम की आलोचना न करें या ईसाई मत का खंडन ना करें तब उन्होंने कहा था कि लोग कहते हैं कि मैं इस्लाम की आलोचना से विरत हो जाऊं परंतु सत्य को ओझल कर देना मेरे लिए संभव नहीं है। जब मुसलमानों का शासन था तो उन्होंने तलवार के बल पर आर्य धर्म एवं संस्कृति को नष्ट किया किंतु आज जब वाणी मात्र से भी उनकी आलोचना की जाती है तो उन्हें आपत्ति होती है, महर्षि दयानंद आगे कहते हैं कि आर्य जाति की यही दशा हुई और यदि इसे न संभाला गया तो यह नष्ट हो जाएगी, धर्माचार्यों के प्रमाद के कारण करोड़ों मुसलमान हो गए और अब इसाई हो रहे हैं यदि आर्य जाति को कड़वे उपदेशों के कोडे से न जगाया गया तो इसकी मृत्यु में संदेह ही क्या है? मैं यह काम किसी स्वार्थ से तो कर ही नहीं रहा हूं इसके कारण मैं अनेक प्रकार के कष्ट सहता हूं, गालियां और ईंट पत्थर खाता हूं, विष तक भी मुझे दिया जा चुका है, परंतु जाति और धर्म के लिए मैं सब कुछ सहन करता हूं। महर्षि दयानंद ने एक अन्य स्थान पर भी डंके की चोट पर यह भी कहा कि लोग कहते हैं सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे, चक्रवर्ती राजा भी क्यों ना अप्रसन्न हो हम तो सत्य ही कहेंगे। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने हमेशा सत्य ही सोचा, सत्य ही बोला और सत्य ही जिया। लेकिन सत्य की राह पर चलना सरल नहीं है, इसलिए

- शेष पृष्ठ 7 पर

साप्ताहिक स्वाध्याय

पंडित इंद्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित जीवनी महर्षि दयानंद से क्रमशः साभार

विद्या के स्रोत में स्नान

घर से भागकर प्रतिभाशाली युवक ऋषिकेश और हरिद्वार पहुंचा और वर्षों तक विद्याध्ययन तथा तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को संस्कृत करता रहा। हरिद्वार में ही स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की दया से उसे संन्यास मिला। संन्यासी विरजानन्द विद्या की तलाश में हरिद्वार, कनखल, काशी, गया आदि में चिरकाल तक घूमते रहे और विद्वानों से व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। अमृत के प्यासे महर्षि दयानन्द के गुरु बनने का अधिकार उसी तपस्वी को हो सकता था, जिसने एक उद्देश्य के लिए तपस्या की हो, किसी उत्तम पदार्थ की खोज में कोने-कोने छान मारे हों। इस दृष्टि से देखें तो स्वामी विरजानन्द जी महर्षि दयानन्द के गुरु बनने के पूर्णतया अधिकारी थे।

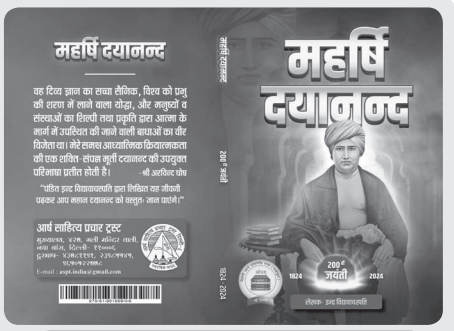

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर प्रकाशित

प्रकाशक- आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, सहप्रकाशक- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, पुस्तक प्राप्ति के लिए vedicprakashan.com ऑनलाइन प्राप्त करें अथवा 9540040339 पर संपर्क करें।

यह स्वामी विरजानन्द जी कौन हैं? पंजाब में कर्तारपुर के समीप गंगापुर नाम का एक ग्राम था। उसमें नारायणदत्त नाम का सारस्वत ब्राह्मण रहता था। महर्षि दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानन्द दण्डी ने उसी के घर जन्म लिया था। बचपन से ही बालक पर आपत्तियों का आक्रमण आरम्भ हुआ। 5 वर्ष की आयु में चेचक ने उनकी आंखें शक्तिहीन कर दीं और 11वें वर्ष में बालक के माता-पिता होनहार बच्चे को अनाथ छोड़कर परलोक सिधार गए। बालक के पालन-पोषण का बोझ बड़े भाई के कन्धों पर पड़ा। बड़ा भाई साधारण दुनियादार भाइयों की भांति नासमझ था। वह एक अन्धे अतएव अनुपयोगी भाई की पेट पालना में कोई विशेष लाभ नहीं देखता था। भाई और भावज की कृपा से तंग आकर शीघ्र ही बालक को घर छोड़ना पड़ा।

घर से भागकर प्रतिभाशाली युवक ऋषिकेश और हरिद्वार पहुंचा और वर्षों तक विद्याध्ययन तथा तपश्चर्या द्वारा अपनी आत्मा को संस्कृत करता रहा। हरिद्वार में ही स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती की दया से उसे संन्यास मिला। संन्यासी विरजानन्द विद्या की तलाश में हरिद्वार, कनखल, काशी, गया आदि में चिरकाल तक घूमते रहे और विद्वानों से व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। अमृत के प्यासे महर्षि दयानन्द के गुरु बनने का अधिकार उसी तपस्वी को हो सकता था, जिसने एक उद्देश्य के लिए तपस्या की हो, किसी उत्तम पदार्थ की खोज में कोने-कोने छान मारे हों। इस दृष्टि से देखें तो स्वामी विरजानन्द जी महर्षि दयानन्द के गुरु बनने के पूर्णतया अधिकारी थे।

विद्याध्ययन कर लेने पर दण्डी जी ने विद्यार्थियों को पढ़ाना आरम्भ किया। उनके यश का विस्तार चारों ओर होने लगा; विशेषकर व्याकरण में उनका पाण्डित्य बहुत ऊंचे दर्जे का समझा जाता था। उनके पाण्डित्य और मधुर श्लोक-गान से प्रसन्न होकर अलवर के राजा ने कुछ दिनों तक उन्हें अपने यहां रखा। राजा की प्रार्थना पर दण्डी जी यह शर्त करके अलवर गए थे कि प्रतिदिन राजा 3 घण्टे तक अध्ययन किया करेगा। विलासी राजा अपने प्रण को निभा न सका, परन्तु संन्यासी ने अपना प्रण निभाया। जिस दिन राजा पढ़ने नहीं आया, उससे अगले दिन दण्डी जी का आसन अलवर से उठ गया।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

उच्च रक्त चाप (हाई ब्लड प्रेशर) तथा इससे जुड़े रोग

हृदय का रूप तथा कार्य

हृदय लचीली मांसपेशियों से बना अत्यन्त ही कोमल, लाल रंग के थैले जैसा, चार खण्डों वाला अंग है। दोनों फेफड़ों के मध्य, वक्ष के बायीं तरफ तीसरी से छठी पसली के बीच होता है। इसका आकार स्वस्थ व्यक्ति की अपनी बंद मुट्ठी के समान लगभग 5 इंच चौड़ा, 2.5 इंच मोटा तथा वजन लगभग 5 छटांक या इससे भी कुछ अधिक होता है। स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों में यह प्रायः बड़ा होता है। इसकी शक्ल कलमी आम या नाशपाती के सदृश होती है। यह भीतर से नरम होता है। हृदय की सुरक्षा के लिए सामने छाती की बड़ी हड्डी तथा बायीं तरफ तीसरी, चौथी और पांचवीं पसलियां हैं।

हृदय मनुष्य के जीवन का मुख्य धुरा है। इसका कार्य पम्पिंग विधि द्वारा शरीर की शिराओं द्वारा नियमित रूप से लगातार सारे शरीर के रक्त को प्राप्त करके फेफड़ों की सहायता से उसके से कार्बन-डाइआक्साइड दूषित तत्त्व निकाल कर आक्सीजन-युक्त शुद्ध रक्त धमनियों द्वारा प्रत्येक भाग तक पहुंचाना है। इससे शरीर का पोषण होता है। जीव के माता के गर्भ में आने के 5-6 मास बाद हृदय अपना कार्य शुरू कर देता है और मृत्यु तक निरन्तर दिन-रात, प्रतिपल अपना कार्य करता रहता है। जब हृदय ने विश्राम किया तो मानो मृत्यु हो गई। हृदय एक दिन में लगभग एक लाख बार सिकुड़ता तथा फैलता है। हृदय के इस प्रकार के आकुंचन तथा प्रसारण को उसकी 'धड़कन' कहते हैं। हृदय की गति की यह दर 70 से 75 प्रति मिनट होती है। स्त्रियों का हृदय पुरुषों की अपेक्षा अधिक तेजी से धड़कता है।

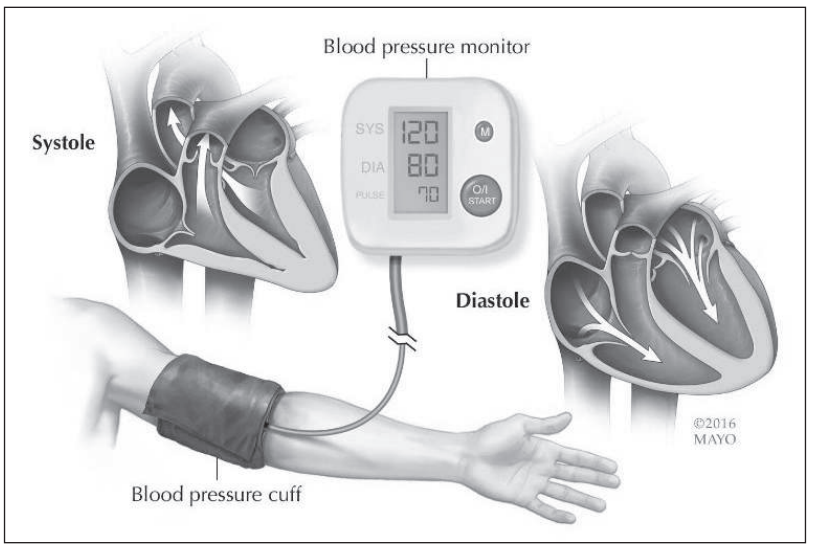

हृदय तथा रक्त संचार से जुड़े रोग

हृदय के भी अनेक रोग हैं। विज्ञान में अभूतपूर्व उन्नति के कारण अब कई ऐसे तरीके निकल आये हैं जिनसे हृदय के विभिन्न रोगों का सहज ही पता लग जाता है। कुछ रोग हृदय की रचना तथा आंतरिक विकारों से संबंधित होते हैं जिन्हें organic disorders कहते हैं तथा कुछ रोग हृदय द्वारा अपना कार्य ठीक प्रकार न करने से संबंधित हैं इन्हें functional disorders कहते हैं। आरगैनिक डिसआर्डरस में सर्जरी उत्तम है। फंकशनल डिसआर्डरस के काफी रोग एक्युप्रेशर तथा उपयुक्त भोजन द्वारा दूर किए जा सकते हैं।

दूसरे अंगों की भांति हृदय के भी अनेक रोग हैं। हृदय तथा रक्त संचार संबंधी जो प्रमुख रोग हैं, वे हैं-

- हाई ब्लड प्रेशर (High Blood Pressure) - उच्च रक्तचाप
- लो ब्लड प्रेशर (Low Blood Pressure) - निम्न रक्तचाप
- वाल्वूलर डिसआर्डरस (Valvular disorders) - हृदय कपाट संबंधी रोग
- आरटेरीओ स्क्लीरोसिस (Arteriosclerosis) - रक्त वाहिनियों का कड़ा पड़ जाना
- वेरीकोज वेनज (Varicose veins) - शिराओं का फूल जाना
- एन्जाइना पेक्टोरिस (Angina Pectoris) - रक्त संचार की कमी से हृदय में तीव्र पीड़ा होना, जिससे बाएं कन्धे या बायें हाथ में दर्द होना।
- कार्डिएक हायपरट्राफी (Cardiac Hypertrophy) - हृदय के आकार की असामान्यता
- कार्डिएक डायलेटेशन (Cardiac Dilatation) - हृदय गुहा के आकार में वृद्धि होना
- पेरीकार्डियल एक्यूजन (Pericardial Effusion) - हृदय के आसपास तरल पदार्थ इकट्ठा होना
- टेकी कार्डिया (Tachycardia) - धड़कन की गति असामान्य रूप में बढ़ना
- आर्टीकुलर फ्लटर (Articular Flutter) - हृदय की क्रिया की गति तीव्र होना
- आर्टीकुलर फिब्रिलेशन (Articular Fibrillation) - हृदय की पेशियों का सिकुड़ना
- ब्रडीकार्डिया (Bradycardia) हृदय का सामान्य गति से कम धड़कना, हार्ट ब्लाक (Heart Block) - हृदय में अवरोध, कोरोनरी थ्राम्बोसिस (Coronary Thrombosis) हृदय की एक या अधिक धमनियों में रुकावट
- हार्ट अटैक (Heart Attack) - दिल का दौरा
- हार्ट फेल्योर (Heart Failure) - हृदय की धड़कन बन्द होना अर्थात मृत्यु।

मूल कारण

शरीर में विजातीय द्रव्य अप्राकृतिक खान-पान तथा गलत रहन-सहन के कारण इकट्ठे होते हैं यथा- व्यायाम तथा शारीरिक परिश्रम न करना, गरिष्ठ तथा असंतुलित भोजन खाना जिससे मोटापा भी हो जाता है, दवाइयों का अधिक सेवन करना, मानसिक तनाव, शक्ति से अधिक श्रम करना, अपर्याप्त विश्राम तथा अपर्याप्त निंद्रा तथा किसी प्रकार का कोई नशा करना। आधुनिक युग में वस्तुतः रहन-सहन के तरीके में परिवर्तन (changing of life styles) के कारण उच्च रक्तचाप तथा हृदय रोग बढ़ रहे हैं।

-क्रमशः अगले अंक में...

पृष्ठ 1 का शेष

स्वामी आनंद बोध सरस्वती स्मृति दिवस संपन्न

गौशाला का निरीक्षण करते हुए अनन्य सहयोगी सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, बच्चन सिंह जी एवं मंच पर उपस्थित धर्मपाल आर्य जी, त्रिलोक जी, मनमोहन भाडाना जी, देवेन्द्र जी, अशोक आर्य जी, सतीश चडडा जी तथा इस अवसर पर देवेश जी, बृहस्पति जी, पुष्पेन्द्र जी, पृथ्वीपाल जी को सम्मानित करते हुए मुख्य अतिथि एवं अध्यक्ष।

में महर्षि दयानंद और आर्य समाज की मान्यताओं, शिक्षाओं को स्वामी आनंद बोध जी ने आगे बढ़ाया का विस्तार पूर्वक वर्णन किया और उन्हें उपस्थित समूह की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि प्रदान की। वक्ताओं के इस क्रम में श्री मनमोहन भड़ाना जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वर्तमान में गौ माता की स्थिति को बताते हुए उनके संरक्षण और संवर्धन के लिए विशेष व्यवहारिक विचार प्रस्तुत किए, मुख्य वक्ता के रूप में श्री विद्या प्रसाद मिश्रा जी ने योगीराज भगवान श्री कृष्ण के द्वारा गौ सेवा और गोवर्धन से लेकर आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रेरणा और आदर्श को सबके सामने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने अपने विशेष वक्तव्य में महर्षि दयानंद सरस्वती जी के महान व्यक्तित्व और कृतित्व को आधार बनाकर अपने संबोधन में कहा की महर्षि एक ऐसा विराट और विशाल व्यक्तित्व थे, जिनमें अनेकानेक गुण शोभायमान थे, परमात्मा का लाख-लाख धन्यवाद करते हैं कि हमें ऐसे दिव्य गुरु के पथगामी होने का सौभाग्य मिला है, महर्षि ईश्वर भक्त, गुरु भक्त, वेद के प्रति प्रेम रखने वाले, राष्ट्रभक्त, संसार का उपकार करना उनका सर्वोपरि संदेश था, वे प्राणी मात्र के प्रति प्रेम रखने वाले एक महान वक्ता, महान लेखक और महान शास्त्रार्थ महारथी होने के साथ ही उदार और करुणा के सागर थे। इसी करुण भाव से उन्होंने समस्त जीव, जंतुओं सहित गौ माता के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए गोकरुणा निधि जैसी महान पुस्तक की रचना की। महर्षि के अतिरिक्त इतनी संवेदनशीलता और गौ माता के प्रति इतनी निष्ठा व्यक्त करने वाला कोई उदाहरण संसार में नहीं मिलता। एक गौ माता अपने जीवन काल में साढे तीन लाख लोगों का पालन पोषण करने का सामर्थ्य रखती है, यह महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने ही संसार को बताया। आज जब भारत का स्वाभिमान जाग रहा है और भारत विश्व गुरु बनने की ओर आगे बढ़ रहा है, तब हम महर्षि दयानंद सरस्वती जी को शत-शत नमन करते हुए गौरव का अनुभव करते हैं और उनके अनन्य शिष्य स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी पक्के दयानंदी और महान कर्मयोगी थे। इस अवसर पर मैं सभी का हार्दिक धन्यवाद करता हूं और इसके साथ ही उन्होंने सबको नमस्ते करते हुए अपना उद्बोधन समाप्त किया।

वक्ताओं के इस क्रम में दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित आर्यजनों को संबोधित करते हुए कहा की स्वामी आनंद बोध सरस्वती जी का आज स्मृति दिवस है, हम उन्हें नमन करते हैं और उनसे प्रेरणा भी लेते हैं। अभी हम गौशाला तथा गौ सेवा की विस्तार पूर्वक चर्चा सुन रहे थे। इस अवसर पर मैं सभी से आग्रह पूर्वक कहना चाहता हूं कि आप गाय का दूध पीना शुरू करें, गाय का दूध पीने की आदत डालें तो गौरक्षा का कार्य स्वयं संभव होने लगेगा और यह संकल्प भी करें कि हमें गौ रक्षा करनी है, तभी हमारा आर्यों का मनोरथ पूर्ण होगा। श्रीमती सुषमा शर्मा जी ने उपस्थित सभी महानुभावों का गो संवर्धन केंद्र गाजीपुर की ओर से हार्दिक आभार करते हुए गौ सेवा के महत्व को बताया और इस वर्ष अधिक बारिश होने से जो गौशाला में पानी भरने की समस्या उत्पन्न हुई, उसको पक्का करने के लिए अपनी तरफ से घोषणा की और सभी को प्रेरित किया तथा गौ सेवा हेतु समर्पण भाव की प्रशंसा की एवं सभी आयोजकों का आभार भी व्यक्त किया। श्री विनय आर्य जी ने उपस्थित सभी महानुभावों में स्वामी रामस्वरूप जी और मधुर भजन गायक श्री कुलदीप जी और उनके साथियों सहित श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी आदि का विस्तार पूर्वक परिचय दिया। श्री अशोक आर्य जी ने सफलता पूर्वक मंच का संचालन किया। इस अवसर पर विशिष्ट सेवा के लिए श्री देवेश आर्य जी, श्री पुष्पेंद्र आर्य जी और श्री पृथ्वी पाल जी सहित श्री बृहस्पति आर्य जी इत्यादि का प्रधान जी द्वारा सम्मान किया गया और प्रेम सौहार्द के वातावरण में पूरा कार्यक्रम शांतिपाठ के साथ संपन्न हुआ।

आर्य समाज शादीपुर खामपुर में स्वास्थ्य जांच शिविर संपन्न

आर्य समाज शादीपुर खामपुर द्वारा महर्षि दयानंद विद्यालय के प्रांगण में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें प्राइमस सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल के डॉक्टर तथा सहयोगी टीम ने अहम भूमिका का निर्वहन किया। इस जांच शिविर में दांत, आंख, बीपी, रक्तचाप, ई.सी.जी. की जांच सुविधा विद्यालय के बच्चों, अभिभावकों तथा स्थानीय निवासियों को नि:शुल्क प्रदान दी गई। आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आंखों के चश्मे भी नि:शुल्क प्रदान किए गए।

गौ सेवा एवं परोपकार की अनुपम स्थली, महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र, गाजीपुर

गौ संवर्धन केन्द्र पर विशेष

हमारी वैदिक संस्कृति में जैसे ईश्वर की अमृतवाणी वेद को वेद माता, राष्ट्र को भारत माता, भूमि को धारती माता, जन्म देने वाली मां को माता कहा जाता है, वैसे ही गाय को माता कहने की प्राचीन परंपरा है। वेदों में गाय के महत्व, स्वरूप तथा संरक्षण का अनेक स्थानों पर वर्णन आया है। ऋग्वेद में 723, यजुर्वेद में 87, सामवेद में 170 और अथर्ववेद में 331 बार गाय के विषय में विचार विद्यमान हैं। वेदों की दृष्टि में गाय आरोग्यता, वात्सल्य, करुणा, परोपकार, एवं राष्ट्र को समृद्धि प्रदान करने वाला महान पशु है। **''माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाम अमृतस्य नाभि:''** ऋग्वेद 8,1,15 गाय की महानता पर विचार व्यक्त करते हुए मंत्र का संदेश है- गाय रुदों की माता, वसुओं की पुत्री, आदित्यों की बहन और अमृत का केंद्र है। वेदों में वर्णित गाय की महानता को हमारे ऋषि-मुनियों, महापुरुषों, पूर्वजों ने स्वयं अनुभूत किया और मानव मात्र को गाय की सेवा-संरक्षण और संवर्धन की प्रेरणा प्रदान की है। इसका उल्लेख उपनिषदों में, मनुस्मृति में, ब्राह्मणग्रंथों में, आयुर्वेद में, सुश्रुत और चरक संहिता में, निरुक्त में, निघंटू में, कौटिल्य अर्थ शास्त्र में, पंचतंत्र में, गीता में और रामायण आदि ग्रंथों में अनेक स्थानों पर प्राप्त होता है।

ब्रिटिश हुकुमत के समय महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने गो की रक्षा के लिए विशेष हस्ताक्षर अभियान चलाया था, उन्होंने गो हत्या को एक जघन्य पाप की संज्ञा देते हुए गो को सुख, समृद्धि का खजाना बताया था। **'गो करुणानिधि'** नामक पुस्तक की रचना करके उन्होंने गाय के प्रति जो अतिशय-अनन्य प्रेम भाव दर्शाया है, वह सारे मानव समाज के लिए स्तुत्य है। महर्षि दयानंद जी की प्रेरणा और निर्देश के अनुसार आर्य समाज हमेशा गो सेवा और संरक्षण के लिए कार्य करता रहा है। आर्य समाज द्वारा संचालित भारत में सैकडों गौशाला इसका सशक्त प्रमाण है। आज भारत में गोवंश के लिए जो महामारी फैली हुई है, विभिन्न राज्यों में प्रतिदिन लाखों गो तड़प-तड़प कर मर रही हैं, इसको लेकर आर्य समाज केंद्र सरकार और सभी राज्य सरकारों से यह मांग करता है कि गौ रक्षा के लिए, गौ के उत्तम स्वास्थ्य के लिए शीघ्र अति शीघ्र उचित कदम उठाए, जिससे गोमाता की सेवा, रक्षा और संवर्धन हो सके।

महर्षि दयानंद गो संवर्धन केंद्र की स्थापना

आर्य समाज के सिद्धांत-मान्यताओं और परंपराओं में गौ सेवा का प्रमुख स्थान है। इसलिए प्रतिदिन आर्य समाजों में यज्ञ के उपरांत 'गौ माता की-जय' 'गौ माता का-पालन हो' आदि जयघोष बड़े सम्मान से लगाए जाते हैं। जयघोष

- शेष पृष्ठ 7 पर

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती कविताओं की रचना करें और पुरुस्कार पाएं

विजय-पताका फहरैया भूमि-भारत पै -दयानन्द -कवि अखिलेश मिश्र

वेद उधरैया औ विधर्मिन मथैया मद,
दीन अपनैया है कन्हैया वर, वृत को
'अखिलेस' पाठ ब्रह्मचर्ज को पढ़ैया पूरो,
जाति सुधरैया बिनसैया भ्रम-भूत को।।
भैया सत्य, सील को गहैया आर्य-मारग त्यों,
पण्डित प्रकाण्ड सुरझैया धर्म-सूत को।
विजय-पताका फहरैया भूमि-भारत पै,
एकै दयानन्द भो हरैया छुआछूत को।।

जग्यनि की बात कहाँ अग्यनि में जातो गिनो,
सहि दुख्ख भारी मत गहतो अनारी को।
'अखिलेस' होतो पाठ कलमा, कुरान ही को,
कौन नाम लेतो सिवा, राम, व्रत-धारी को।।
सुद्दिध की समस्या हल होती कैसे सींचतो को?
जल दै तपस्या संघटन-फुलवारी को।
सिख्या-सूत्र-धारिन की मिलती निसानी कहाँ;
होतो ना जनम दयानन्द ब्रह्मचारी को।।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के अवसर पर आर्य संदेश के सभी आयु वर्ग के पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद जी के जीवन पर विभिन्न घटना क्रमों पर आधारित कविता की रचना करके संपादक, आर्य संदेश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001, पर भेजें अथवा Email-aryasandeshdelhi@gmail.com करें। आपकी स्तरीय कविता को आर्य संदेश साप्ताहिक में प्रकाशित किया जाएगा और विशेष अवसर पर आपको पुरुस्कृत भी किया जाएगा।

'सहयोग' आर्य समाज का अनूठा सेवा प्रकल्प

आइए, हम सभी सहयोगी बनने का लें संकल्प

राष्ट्र एवं मानव सेवा को समर्पित आर्य समाज एक महान परोपकारी संगठन है। संसार का उपकार करना इसका मूल मंत्र और प्रमुख उद्देश्य है। अत: आर्य समाज लगभग पिछले 150 वर्षों से निरंतर सेवा साधना के पथ पर अग्रसर है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा भारत में एवं दिल्ली एन.सी.आर. में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयोजन में मानव कल्याण के लिए ''सहयोग'' एक ऐसा अनोखा, अनूठा सेवा प्रकल्प सिद्ध हो रहा है, जिसके माध्यम से अभाव ग्रस्त गरीब परिवारों में खुशियों की एक सुखद किरण प्रकट हुई है। यूं कहने को तो 21 सदी का पुण्यमय भारत देश विश्व की पांचवीं अर्थ व्यवस्था के रूप में विख्यात है। किंतु आज भी यहां असंख्य लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम रह जाते हैं। जहां उनके पहनने के वस्त्र, जूते, चप्पल, सर्दी से बचाव के लिए कंबल और गर्म कपड़े, बच्चों के खेलने के लिए खिलौने और घर में पढ़ने पढ़ाने के लिए स्टेशनरी के सामान आदि की हमेशा कमी ही बनी रहती है। इस तरह के अभाव में हर आयु वर्ग के लोग घुट घुटकर जीवन जीने को मजबूर रहते हैं। दूसरी तरफ समाज में एक वर्ग ऐसा भी है जिनके पास उपरोक्त समस्त मूलभूत वस्तुओं की भरमार है और आवश्यकता से अधिक होने के कारण वे इन चीजों को घर में रखने से परेशान हो रहे हैं। वे अपने उपयोगी वस्त्रों, जैसे पेंट सर्ट, कुर्ता पायजामा, स्वेटर, कोट पेंट, सलवार, कमीज, साड़ी, गर्म कपडे, जूते चप्पल, सैंडल, बच्चों के खिलौनों, कापी किताब, स्टेशनरी के सामान, कंबल आदि के अतिरिक्त होने के कारण अनावश्यक रखरखाव से परेशान होकर या तो उन्हें कबाड़ में बेच देते हैं अथवा इधर उधर फेंक देते हैं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना है- 'सहयोग'

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी सहित अन्य अधिकारियों ने जब इस असमानता को अनुभव किया, एक तरफ इतनी सारी चीजों को कहां रखूं, कितना जमा करुं की समस्या है और दूसरी तरफ ऐसी दयनीय स्थिति है कि पर्व त्यौहार के सीजन में बच्चे नये कपड़े और खिलौनों की जिद् कर रहे हैं और गरीब माता पिता उन्हें झूठा दिलासा दे रहे हैं। सर्दी गर्मी में लोग परेशान हैं, इन सभी तथ्यों पर विचार करते हुए आर्य समाज के नेतृत्व को महर्षि दयानंद सरस्वती जी के जीवन से जुड़ी हुई वह घटना याद आई कि जब एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन उतारकर उसे जल में प्रवाहित कर दिया था। तब इस घटना को देखकर महर्षि दयानंद का कोमल हृदय द्रवित हो उठा था और उन्होंने अपने शरीर पर कम वस्त्र धारण करने का निश्चय कर सर्दी, गर्मी और बरसात में केवल एक कोपीन पहनकर रहना आरंभ कर दिया था। ऐसे दयालु महर्षि दयानंद सरस्वती के अनुयाई, सम्मानित अधिकारियों ने गरीब निर्धन जरूरतमंद लोगों को सहयोग देने के लिए एक विशेष सेवा योजना का शुभारंभ किया, जिसे आज हम सहयोग के रूप में जानते हैं। एक उदारता की भावना और ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' की कामना है- सहयोग। सहयोग काफी लंबे समय से दिल्ली एनसीआर और पूरे भारत में निर्धन बस्तियों में जाकर लोगों को पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र, जूते, चप्पल, पुस्तकें, स्टेशनरी का सामान, खिलौने, गरम कंबल और अन्य अनेक उपयोगी वस्तुएं विधिवत सम्मान पूर्वक वितरण करता है।

'सहयोग' द्वारा सामान एकत्रिकरण और वितरण की सुंदर व्यवस्था

सहयोग के कार्यकर्त्ता पहले इन सभी वस्तुओं का उन घरों से, संस्थाओं से संग्रह करते हैं, जिनके पास ये सारे साधन अतिरिक्त या अनावश्यक हैं। सहयोग ने जगह जगह एकत्रिकरण के सेंटर और संपर्क बना रखे हैं, जहां से प्रतिदिन यह सामान एकत्रित किया जाता है और फिर उसे साफ सुथरा करके, पैक करके, जैसे वस्त्रों को धुलवाकर, प्रेस कराकर, पैकेट बनाकर जूते चप्पलों को पॉलिश कराकर या फिर स्टेशनरी और खिलौनों को कसौटी पर परखकर, इनका सेवा बस्तियों विधिवत् में वितरण किया जाता है। वितरण कार्यक्रम के अंतर्गत पहले वहां यज्ञ किया जाता है और उस यज्ञ में सभी आयु-वर्ग के लोग इकट्ठा होते हैं, आहुति देते हैं, प्रार्थना करते हैं, गायत्री मंत्र का उच्चारण करते हैं, दुर्गुण, दुर्व्यसनों से बचने के लिए संकल्प लेते हैं और फिर अपनी आवश्यकता अनुसार वस्त्र, बर्तन, खिलौने, स्टेशनरी, सर्दी गर्मी के कपड़े प्राप्त कर प्रसन्नता वक्त करते हैं। इस तरह से सहयोग नित-निरंतर मानव सेवा के कार्यों को करता आ रहा है।

कैसे बनें 'सहयोग' के सदस्य

- सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं।
- इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।
- इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।
- इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन:- आधुनिक परिवेश में हमें ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता हमें पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की ओर से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग, शुभ कर्मों का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक

Khandav Forest

When Maharishi Dayanand set foot in the field of work after taking blessings from the Guru, the condition of Arya society at that time was that it needed a doctor. Due to ignorance, subjugation, enemies, the country of India was becoming inaccessible and rugged like the Tandava forest full of snakes and thorny bushes. He needed an Arjuna who, on the one hand, could kindle the forest by taking out fire from the dust of the forests, and on the other hand, answer the attacks of the Devas and Asuras who tried to extinguish the fire. The plight of the Aryan race at that time was calling for a reformer, calling for such a stranger who could rest a soothing hand on its afflicted parts. In this section, we will mention what was the history and nature of that plight. The entire next part will be devoted to Maharishi Dayanand's efforts to rectify that plight.

Long before the historical period, the Vedas and primarily Vedic literature were confined within the boundaries of India. The people who settled in Iran or reached Greece were the relatives of the Indian Aryans, but this subject is imaginary even though it is a real history. When the world opens its face to the light of history, the religion and social organization of India is found to be different from all other countries. Before the historical period, India had become a separate unit. This is the reason why history tells us the details of religious and social changes in India, it is limited by the boundaries of the country. India's religious changes had little effect outside its borders, and religious changes from outside affected India only when the followers of those religions came into the country as conquerors.

India's wealth, its expansion and its internal diversity etc. all these things have been attracting the conquerors from outside. From time to time, warring tribes from outside have been raiding this golden country to kill cheap prey. The main attacks on India can be divided into 4 categories. The first attack was of Alexander. The second attack was of many tribes of the north, which continued for centuries. Sometimes the Huns, sometimes the Scythians and sometimes the Persians tried to conquer India. The third invasion was that of Islam, which proved to be the most powerful, the most lasting and the most impactful than the earlier invasions. The fourth invasion was that of the European races, which though not very old, was much deeper, more powerful and more dangerous than Islam.

These four invasions have been creating a deep impact on India's religious changes, but it should not be understood to mean that only outside influences have been shaking India's religious thoughts. From time to time, internal feedback had also been generated when there was a need. According to the need of the society, to create compatibility with the changed atmosphere or to improve the deteriorated structure, such reformers have been born who have been trying to improve the spoiled situation, If we see the history of religious changes in India, we will know that it has the effect of both internal reaction and external attack.

Major religious changes that took place before the invasion of the Greeks were mainly the result of internal reaction. The Gnosticism of the Upanishads reacted against the yoga-oriented religion of the Brahmin texts. Then Buddhism arose as a reaction to the same disorder. Both of these big reactions were void of outside influence. It was only generated from within. This was the reason that they all produced mutual perfection like parts of the same body. The Brahmins and the Upanishads etc. went hand in hand with each other and lived like the eyes and ears of a single man. The lofty theology of the Upanishads gradually turned into passive theism and the ritualism of the Brahmin texts into methods of violent sacrifice-reaction. At that time Mahatma Buddha actively preached the message of love and sacrifice and created Dharm a universal He laid the foundation of new religion.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

आचार्य-गुरु-अतिथि-पंचायतन पूजा-पूजा

61-आचार्य

जो कि श्रेष्ठ आचार-युत
विद्या देता आर्य ।
उसको ही कहते सुधी
जगती में 'आचार्य' ।।78।।

62-गुरु

जो दे जन्म स्व बाल को
पालन कर उपदेश ।
वही पिता, आचार्य 'गुरु'
हरे अज्ञता-क्लेश ।।79।।

63-अतिथि

जिसकी तिथि निश्चित नहीं
आवे सुधी सुधार ।
प्रश्नोत्तर उपदेश से करे
'अतिथि' उपकार ।।80।।

64-पञ्चायतन पूजा

जीवित जननी, जनक, गुरु
अतिथि, ईश का प्यार ।
'पूजा पञ्चायतन' है,
यथा योग्य सत्कार ।।81।।

65-पूजा

ज्ञानादिक गुणवान का
यथा योग्य सत्कार ।
'पूजा' का यह अर्थ है,
जाने सब संसार ।।82।।

साभार :

सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

अर्थ-शुचिता का इतना ध्यान

हिन्दी के विश्व ख्याति के साहित्यकार श्रीयुत विष्णु प्रभाकर अपने परिवार की एक घटना की विशेष चर्चा किया करते हैं। जब विष्णु प्रभाकरजी हिसार रहते थे, उन दिनों श्री प्यारेलालजी एक कार्यालय में कार्य करते थे। सरकारी कोष में एक पैसे का लेख नहीं मिलता था। श्री प्यारे लालजी एक निष्ठावान् आर्यसमाजी थे। वे अपनी कर्मठता व प्रामाणिकता के लिए प्रसिद्ध थे।

बिजली तब थी नहीं। प्यारेलालजी ने अपने अधीनस्थ छह क्लर्कों को इस पैसे की खोज में लगाया। कई रातें लग गईं। जब पैसे का अन्तर पकड़ में आया, तब श्री प्यारेलालजी ने सुख का साँस लिया।

यह ठीक है कि एक पैसे की खोज में कुछ आने का तेल फूँका गया छह व्यक्तियों का कितना श्रम लगा, परन्तु अर्थ-शुचिता की जो छाप प्यारेलालजी ने अपने पीछे छोड़ी, उसकी वर्षों तक हिसार में चर्चा होती रही।

श्री प्यारेलालजी के सुपुत्र श्री सुरेन्द्रजी गुप्त हिसार में आर्यसमाज के एक स्तम्भ हैं। उन्होंने भी अपने पिताजी से स्पष्टवादिता, अर्थ-शुचिता व समाज-प्रेम आदि गुण बपौती में पाए हैं। जो लोग कष्ट सहकर भी मर्यादाएँ स्थापित करते हैं, वे मरकर भी अमर रहते हैं। महाकवि 'सरशार' ने इन्हीं के लिए लिखा है-

मरने वाले जी रहे हैं,
जीने वाले हैं कहाँ?

मुझे न भावे

यह 1960 ई. से कुछ पहले की बात होगी कि भारत की कांग्रेस सरकार श्री विनोबा भावे की छवि बनाने के लिए प्रत्येक सम्भव उपाय करती थी। विनोबाजी भी शासन से जनहित की कोई बात भले ही नहीं मनवा सकते थे फिर भी उन्हें सन्तोष था कि सरकार उन्हें सन्त मानती थी। यह भी सत्य है कि जनता का एक बड़ा भाग भी उन्हें 'सरकारी सन्त' मानता था।

उन्हीं दिनों किसी पत्रकार ने पं. श्री रामचन्द्रजी देहलवी से पूछा लिया कि ''विनोबाभावे के बारे में आपका क्या विचार है?''

पण्डितजी ने झट से उत्तर दिया, 'विनोबाभावे सबको भावे, मुझे न भावे।''

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

200 कुण्डीय यज्ञ संपन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200वें जन्मदिन के अवसर पर ओड़िशा प्रदेश के बरगड़ जिला के गाईसिलेट विकासखण्ड के कलंगापाली ग्राम में सैकड़ों श्रद्धालु माताओं व सज्जनों की उपस्थिति में गुरुकुल हरिपुर के संचालक वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. सुदर्शन देव जी के ब्रह्मत्व में व गुरुकुलीय ब्रह्मचारियों के मन्त्रोच्चारण द्वारा 200 कुण्डीय वैदिक विश्वशान्ति यज्ञ व प्रवचन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

ब्रेल लिपि में
महर्षि दयानन्द जीवनी
मात्र 1000/-रु
ब्रेल लिपि में
सत्यार्थ प्रकाश
मात्र 2000/-रु
अपने क्षेत्र के नेत्रहीनों/अंध विद्यालयों को अपने आर्यसमाज की ओर से भेंट करें।
-: प्राप्ति स्थान :-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

पृष्ठ 2 का शेष

उन्होंने संसार को कल्याण की राह पर अग्रसर करते-करते स्वयं विष पीकर अमर हो गए।

अभी 13 सितंबर 2023 को मुंबई में इंडिया गठबंधन द्वारा कुछ पत्रकारों का यह कहते हुए बहिष्कार करने की घोषणा की गई। मुंबई में इंडिया गठबंधन की ओर से कांग्रेस प्रवक्ता और कमेटी के सदस्य पवन खेड़ा ने कहा है कि कुछ चौनलों ने पिछले नौ वर्षों में नफरत का बाजार लगा लिया है। आइएनडीआइए दलों ने समाज को नुकसान पहुंचा रहे इस नफरत से भरे नैरेटिव को वैधता नहीं देने का फैसला किया है। इस फैसले के पीछे यही सोच है। विपक्षी गठबंधन ऐसी किसी कार्रवाई में भागीदार नहीं बनना चाहता जो समाज में नफरत फैलाती है। खेड़ा ने कहा, 'हम किसी एंकर के विरुद्ध नहीं हैं, लेकिन हम ऐसे प्रयासों में एक पार्टी नहीं बनना चाहते।'

उन्होंने कहा कि वे मीम्स बना सकते हैं या उनके नेताओं को निशाना बना सकते हैं, लेकिन वे ऐसा माहौल नहीं बनाएंगे। हम इस नफरत के बाजार में ग्राहक नहीं बनेंगे। कांग्रेस नेता ने कहा, ''हमने भारी मन से यह सूची जारी की है। हमें उम्मीद है कि ये एंकर कुछ आत्मनिरीक्षण करेंगे और सुधारात्मक कदम उठाएंगे।'' बीजेपी ने विपक्षी गठबंधन के इस फैसले की कड़ी आलोचना की है। पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने 'इंडियन नैशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस' पर हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि उसके घटक सिर्फ दो चीजें कर रहे हैं, जिनमें सनातन संस्कृति को कोसना और मीडिया को धमकी देना शामिल हैं। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में आरोप लगाया, 'इन दलों में आपातकाल के दौर की मानसिकता जिंदा है।' भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने यह भी कहा, 'आईएनडीआई गठबंधन को अपनी हरकतों से तुरंत बाज आना चाहिए। उन्हें इसके बजाय रचनात्मक कार्य और लोगों की सेवा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।' भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि कांग्रेस के इतिहास में मीडिया को धमकी देने और अलग-अलग विचारों वाले लोगों को चुप कराने के कई उदाहरण हैं। इस क्रम में उन्होंने प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी के कार्यकाल का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, 'पंडित नेहरू ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया और उनकी आलोचना करने वालों को गिरफ्तार किया। इंदिरा जी तो इस मामले में स्वर्ण पदक विजेता बनी हुई हैं। उन्होंने प्रतिबद्ध न्यायपालिका, प्रतिबद्ध नौकरशाही का आह्वान किया और भयावह आपातकाल लगाया। राजीव जी ने मीडिया को राज्य के नियंत्रण में लाने की कोशिश की लेकिन बुरी तरह विफल रहे।'

हम यहां पर मोहब्बत और नफरत के परवानों से यही कहना चाहते हैं कि इस इस दिखावटी और बनावटी तथा सजावटी मोहब्बत और नफरत की तथाकथित दुकानदारी और बाजार से ऊपर उठकर जरा सत्य और असत्य पर भी विचार किया जाए। जिसमें धर्म-अधर्म, हिंसा-अहिंसा पाप और पुण्य, अच्छाई और बुराई का भी तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। अपने हितों से ऊपर उठकर राष्ट्रहित पर भी थोड़ा चिंतन किया जाए, कब तक हम इस तरह से अपने आप को छलते रहेंगे, देश को धोखा देते रहेंगे, क्योंकि हर पत्रकार का अपना धर्म होता है, अगर वह सही है तो सही है और अगर गलत है तो वह गलत है। लेकिन इसकी भी अपनी एक कसौटी बनाई गई है, एक नियम, व्यवस्था और कानून बनाया गया है, जिसका पालन करना ही सबका धर्म है।

-संपादक

महर्षि दयानन्द उवाच परोपकारी एवं प्रेरक शिक्षाएं

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की प्रमुख रचना सत्यार्थ प्रकाश से लेकर उनकी जीवनी, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, सवमंतव्यामंतव्य प्रकाश, उपदेश मंजरी आदि अनेक ग्रंथों से चयनित परोपकारी और प्रेरक शिक्षाएं आर्य संदेश के नियत नियमित कॉलम में महर्षि दयानंद उवाच के नाम से प्रकाशित की जा रही हैं। सभी पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानंद सरस्वती की इन जनकल्याण कारी शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने के लिए सभी आप इनका सोशल मीडिया पर प्रचार-प्रसार करें और महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें...

आर्यधर्म ही सर्वमान्यः- मैं सिवाय वेदोक्त सनातन आर्यावर्त्तीय धर्म के अन्य सोसाइटी समाज व सभा नियमों को न स्वीकारता था, न करता हूँ. न करूँगा। क्योंकि यह बात मेरे आत्मा की दृढ़तर हैं, शरीर प्राण भी जाये तो भी इस धर्म से विरुद्ध कभी नहीं हो सकता।

(ऋ. द. स. के पत्र और विज्ञापन प्र. भा. पृ. 318)

आचरण स्वतः मेंः- जैसे कोई किसी को दुर्व्यसन छुड़ाने का उपदेश करता और आप उसी दुर्व्यसन में फँसा है, उस का उपदेश कोई भी न मानेगा। **(ऋ. द. प. वि. भाग 2 पृ. 750)**

आचार्य किसे कहेंः- जो संगोपांग वेदविद्याओं का अध्यापक सत्याचार का ग्रहण और मिथ्याचार का त्याग करावे वह 'आचार्य' कहाता है। **(स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश पृ. 14)**

आचार्य का प्रियाचरणः- विद्यार्थी विद्वान, सुशील, निरभिमानी, सत्यवादी, धर्मात्मा, आस्तिक, निरालस्य, उद्योगी, परोपकारी, वीर, धीर, गम्भीर, पवित्राचरण, शान्तियक्त, दमनशील, जितेन्द्रिय, ऋजु प्रसन्न वदन होकर माता-पिता, आचार्य, अतिथि, बन्धु, मित्र, राजा, प्रजा आदि के प्रियकारी हों। जब किसी से बातचीत करें तब जो-जो उसके मुख से अक्षर, पद वाक्य निकलें उसको शान्त होकर सुनके प्रत्युत्तर देवें। **(व्यवहारभानु पृ. 10)**

आत्मवत्ः- जैसे किसी की स्त्री दूसरे पुरुष से प्रसिद्ध वा अप्रसिद्ध प्रीति करे तो उसके पति को कितना बड़ा क्लेश होता है। इसी प्रकार पति के पर स्त्री वा वैश्या गमन से पत्नी को महादु:ख होता है।

(ऋ. द. प. वि. भा. 2 पृ. 747)

पृष्ठ 4 का शेष

गौ सेवा एवं परोपकार की अनुपम स्थली, महर्षि दयानंद गौ संवर्धन केंद्र, गाजीपुर

लगाने वाली भावना और कामना को साकार करते हुए आर्यसमाज पूरे भारत में कई गोशालाओं का सफल संचालन शुरू से ही करता आ रहा है। इसी महान परोपकारी अनुक्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 1990 में महर्षि दयानंद गोसंवर्धन केंद्र गाजीपुर दिल्ली की स्थापना की गई। जहां आज 1600 के लगभग गऊओं की सेवा पूरी निष्ठापूर्वक की जा रही है।

गोवंश वृद्धि

महर्षि दयानंद गोसंवर्धन केंद्र गाजीपुर का आरंभ 20 गायों की सेवा से हुआ था। गोवंश की निरंतर वृद्धि के परिणाम स्वरूप आज गो संवर्धन केंद्र परिसर में लगभग 1600 की बड़ी संख्या में गोमाता की सेवा की जा रही है। जिनमें गाय, बछडे-बछियां, बैल और सांड इत्यादि शामिल हैं। वर्तमान में गोवंश की इस वृहद् संख्या में अधिकांश गाय, बूढ़ी हैं या बछडे-बछिया आदि छोटी हैं। केवल 200 गाय ही दूध देती हैं। शेष गोवंश की सेवा-पालन पोषण आदि निस्वार्थ भाव से केंद्र द्वारा किया जा रहा है।

गोदुग्ध अमृत समान

एक बार किसी पत्रकार ने एक महात्मा से प्रश्न किया की महाराज दूध देने वाले पशुओं में सबसे उत्तम दूध किसका होता है? महाराज ने बड़े सोच-समझकर उत्तर दिया कि भाई बकरी का दूध अच्छा होता है। पूछने वाला आश्चर्य में पड़ गया और उसने कहा कि महाराज हमने तो सुना है कि सभी दुधारू पशुओं में गाय का दूध श्रेष्ठ होता है और आप कह रहे हैं कि बकरी का? महात्मा ने कहा भाई आप अपनी जगह ठीक हैं लेकिन गाय का दूध केवल दूध नहीं होता वह तो अमृत होता है। इसलिए उसे दूध की श्रेणी में नहीं रख सकते। महर्षि दयानंद गो संवर्धन केंद्र में लगभग 1000 लीटर अमृत के समान गोदुग्ध प्रतिदिन होता है, जिसे पूर्वी दिल्ली और दिल्ली के अन्य हिस्सों में गोमाता के प्रति श्रद्धावान भक्तों को सप्लाई किया जाता है। उसकी आय से ही गोमाता की सेवा की जाती है। किंतु गोदुग्ध से प्राप्त धनराशि 1600 से ज्यादा गऊओं की सेवा के लिए पर्याप्त नहीं होती। इसलिए गो सेवा हेतु सहयोग राशि की निरंतरत अपेक्षा बनी रहती है।

गोसंवर्धन केंद्र के उत्पादन

आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है। अत: आज जो कैमिकल युक्त खेती का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है, जिसमें यूरिया और अनेक तरह के कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है, फल, सब्जी-अन्न सब विषैले और दूषित हो रहे हैं परिणाम-स्वरूप कैंसर जैसी महामारी समाज में फैलती जा रही है, उसके समाधान हेतु गाय के गोबर से निर्मित खाद, गोमूत्र-अर्क आदि का प्रयोग जैविक खेती के लिए समाज को जागृत करने के लिए किया जा रहा है।

गो सेवक समर्पित कार्यकर्ता

गोसंवर्धन केंद्र में गोसेवा के समुचित प्रबंध के लिए मजबूत समर्पित कार्यकर्त्ताओं की टीम सेवारत है। ये सभी महानुभाव गोपालन-संरक्षण और संवर्धन में निपुण हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य की देखभाल हेतु तीन सुपरवाईजर, एक सुयोग्य-अनुभवी पशु चिकित्सक, दो कंपाऊंडर, 30-गो सेवक, एक अकाऊंटेंट, प्रबंधक तथा कई अन्य समर्पित गोभक्त दिन-रात सेवारत रहते हैं। इन सभी महानुभावों की गो सेवा-भक्ति स्तुत्य एवं प्रशंसनीय है।

गो के उत्तम स्वास्थ्य हेतु पुष्टिवर्धक चार

गोसंवर्धन केंद्र में पूरे गोवंश के लिए पुष्टिवर्धक भोजन चारे की संपूर्ण व्यवस्था रहती है, हरे चारे की पर्याप्त मात्रा, चूरी-चौकर खल इत्यादि को नियमित प्रयोग किया जाता है। गुड-नमक-औषध आदि भी चिकित्सकों के परामर्श के अनुसार गायों को समय-समय पर खिलाया जाता है। परिणाम स्वरूप लगभग गौधन स्वस्थ रहता है, छोटे बछड़े-बछडियां बच्चों की भांति खूब कूदते फांदते हैं।

सोमवार 18 सितम्बर, 2023 से रविवार 24 सितम्बर, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 20-21-22 सितम्बर, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 20 सितम्बर, 2023

ओ३म्

An Initiative of Arya Samaj

Scholarship scheme for further studies of
12th pass economically weaker section students

ARYA PRAGATI SCHOLARSHIP TEST 2023

- Eligibility: 12th or Equivalent Pass.
- Age Limit: 16 to 25 years as on last date of application.
- Students will be selected on the basis of Written Test and Interview for the scholarship.
- The eligibility test will be based on Online Multiple Choice Questions.
- The subject for the eligibility test will be General Knowledge and Reasoning.

Last date for application 15 October 2023

To apply visit the website www.aryapragati.com

For more information please contact:-
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

JioTV Jio TV+
आर्य समाज का एक मात्र टीवी चैनल
आर्य सन्देश टीवी
Arya Sandesh TV
अब जियो टीवी नेटवर्क पर भी
Jio Set Top Box और JIO मोबाइल App पर उपलब्ध

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता प्रचार एवं विशेष संस्करण

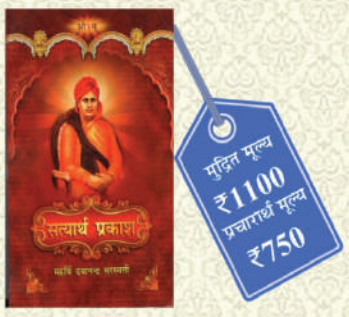

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on
vedicprakashan.com and amazon
bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE
TOWARDS CREATING A
CLEANER | GREENER | SAFER
TOMORROW.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● संपादकः धर्मपाल आर्य ● सह संपादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह